आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:12/12/2022; Published:31/01/2023

कहानी

मिलना — बिछड़ना

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

मूल: ई सांग (कोरियाई)

1

मैं कोई अठारह वर्ष का हूँ — मार्च का महीना है — मैं जब खांसता हूँ तो खून निकल आता है। एक दिन मैंने अपनी दाढ़ी काट ली, जिसे मैंने छः महीने तक बड़े प्यार और हिफ़ाजत से बढ़ाया था। और अब बस तितली सी मूँछें छोड़ रखी थीं। उसके बाद से चीनी दवाई के दस पैकेट अपनी जेब में रखकर मैं 'बी' नामक एक शांत 'हॉट स्प्रींग' गया था, जहाँ जाकर मरने में भी मुझे बड़ी खुशी होती थी।

पर फिर भी मेरा अनखिला यौवन दवाइयों के सहारे जी रहा था। बस इतना था कि मैं अपना नहीं था। हर रात सराय के ठंडे लैम्पपोस्ट के नीचे व्यथित सा पड़ा रहता था।

तीसरे दिन मैं अपनी सराय के मालिक को आगे करके जो मेरा मार्गदर्शक था, उसके साथ उस जगह गया, जहाँ रात को ड्रम की आवाजें सुनायी पड़ती थीं। वहाँ जाकर मैं जिससे मिला वह कुमहोंग थी।

"तुम्हारी उम्र क्या है?"

शरीर से तो वह कच्ची मिर्च सी थी, पर घमंड में मिर्च सी तेज है। जब मैं यह सोच रहा था कि वह ज्यादा से ज्यादा सोलह या उन्नीस साल की होगी किंतु उसने कहा कि "मैं इक्कीस साल की हूँ, साहब।"

"क्या तुम जान सकती हो कि, मैं कितने साल का हूँ?"

"जी, चालीस? या उनचालीस?"

मैंने सिर्फ 'हूँ' कहा और अपनी उम्र की गरिमा जताते हुए अपने हाथ बांध लिये। उस दिन जब हम विदा हुए थे तो कुछ भी घटित नहीं हुआ था।

दूसरे दिन मेरा एक चित्रकार मित्र 'के' मुझे मिलने आया था। वह मेरा इतना घनिष्ट मित्र है कि वह मेरा मज़ाक भी उड़ा सकता है। उसके बहुत कहने पर मैंने अपनी तितली सी मूँछें काट लीं। जैसे ही अंधेरा होने लगा हम दोनों कुमहोंग से मिलने निकल पड़े।

"साहब! मैंने आपको कहीं देखा है।" उसने कहा।

"कल रात जिस मुँछवाले सज्जन से आप मिली थी, मैं उनका बेटा हूँ। हम दोनों की आवाज एक सी है, है न?" मैंने उसका मज़ाक उड़ाया।

शराब पीने का समय खत्म होने के बाद, जब हम आंगन की ओर मूड़े तब मैंने 'के' के कान में फुसफुसाया।

"कैसी है? ठीक है न? पटाने की कोशिश करोगे?"

"नहीं, पर तुम पटा सकते हो।"

"चलो, उसे सराय में ले चलते हैं और सिक्का उछालकर फिर तय करते हैं।"

"अच्छी बात है।"

"टॉईलेट जाना है।" का बहाना करके 'के' खिसक गया, इसलिए सिक्का उछालने की अब जरूरत नहीं थी। उस रात कुमहोंग ने कबूल किया कि उसने एक बार बच्चे को जन्म दिया था।

"कब?"

"जब मैं सोलह साल की थी, तब मैं एक पुरुष के सानिध्य में आ गयी थी और सत्रह साल की उम्र में माँ बन गयी।"

"लड़का?"

"लड़की।"

"कहाँ है अब?"

"वह अपने पहली वर्षगांठ के आसपास ही चल बसी।"

दवा लेने के बदले मैंने वह रात कुमहोंग से प्यार करते हुए बितायी। यह बड़ा बेतुका लगता है, पर प्रेम की शक्ति ने मुझे खून की खाँसी से रोका था।

मैंने कुमहोंग को कोई बख्शीश आदि नहीं दी। क्यों? कारण रात-दिन या तो कुमहोंग मेरे कमरे में रहती या मैं उसके।

उसे पैसे देने के बदले मैंने उसे मिस्टर 'वू' से मिलाया — एक मस्तमौला आदमी, जो अपने अध्ययन के लिए फ्रान्स गया था। मेरी सलाह पर कुमहोंग उस आदमी के साथ एक स्वतंत्र स्नानगृह गयी। स्वतंत्र स्नानगृह वास्तव में एक अश्लील स्थापना है। जब मैंने उस जगह पर दोनों के जूते साथ-साथ देखे, तो मैं परेशान नहीं हुआ था।

मैने उसे एक वकील 'सी' से भी मिलाया जो मेरे कमरे की बगल में ही ठहरा हुआ था। और मेरे उत्सुक होकर कहने से प्रभावित वकील ने कुमहोंग के कमरे पर धावा बोल दिया।

मेरी प्रेमिका कुमहोंग, फिर भी मेरे निकट रहती थी। वह अक्सर मुझे दस वोन के नोट दिखाती जो उसे मिस्टर 'वू' या वकील से उसे मिला करते थे, वह बच्ची की तरह मेरे सामने उनकी खूब शेखी बखारती थी।

फिर एक दिन मुझे अपने चाचा की पहली बरसी पर सोउल (Seoul) लौटना पड़ा। मेरे लौटने से पहले हम दोनों एक बहुत ही खूबसूरत जगह गये जहाँ आड़ू के वृक्षों में बहार आयी थी और एक वृक्ष-भवन के पास छोटा सा झरना बड़ी तेजी से झर रहा था। हमने सारा दिन वहाँ बिताया मानो इसके बाद हम जैसे बिछड़नेवाले हैं। स्टेशन के पास मैंने उसकी हथेली में दस वोन की नोट रख दी।

"इन पैसों से मैं महाजन के पास गिरवी रखी अपनी घड़ी छुड़ा लूँगी।" कहती हुई वह सिसक उठी।

2

समय के रहते कुमहोंग मेरी पत्नी बन गयी थी, हमने एक-दूसरे से बहुत प्यार किया। और यह तय किया कि हम अपने अतीत के बारे में एक दूसरे से कुछ नहीं पुछेंगे। मेरा कोई खास अतीत था नहीं, इसलिए मैंने उसे वादा किया कि मैं उसके अतीत के बारे में उसे कोई सवाल नहीं करूँगा।

भले ही कुमहोंग केवल इक्कीस साल की था पर वह इकतीस साल की महिला से भी अधिक समझदार थी। चाहे वह मुझे छोटी लड़की सी दिखाई देती थी और मैं उसे चालिस साल का; जबकि मैं तेईस साल का ही था और दस-ग्यारह साल के लड़के के समान व्यवहार करता था। खैर, हम एक दंपत्ति की तरह बड़ी हंसी-खुशी और प्यार से रह रहे थे।

समय पंख लगाकर उड़ रहा था। निरर्थक सा एक साल बीत गया। अगस्त आ गया, गर्मी का आखरी महीना और शरद का प्रारंभ।

कुमहोंग को अपने जीवन के पुराने दिन याद आते।

मैं रात-दिन सोता रहता था। जिसके कारण उसके जीवन में कोई उत्तेजना नहीं थी। उसने बाहर जाना शुरू किया। वह दिलचस्प लोगों से मिलती और खुद को खुश रखती। अर्थात् कुमहोंग जिसका जीवन अत्यंत सीमित हो गया था, वह पुनः अपने पुराने जीवन की ओर बढ़ने लगी।

अब वह अपने चालबाजों की शेखी बखार नहीं रही थी, बल्कि छिपाती है। जो कि यह उसके स्वभाव में नहीं था। वहाँ कुछ छिपाने लायक क्या था? यूँ उसे वह सब छिपाने की जरूरत नहीं थी। अगर वह चाहती तो वह अपने किये पर गर्व कर सकती थी।

मैं मौन ही रहता था। मैं अक्सर 'पी' के घर जाकर सोया करता था ताकि कुमहोंग को कोई परेशानी ना हो। जिस कारण 'पी' हमेशा मेरी ओर सहानुभूति से देखा करता था।

ऐसा नहीं था कि मैं अपनी पत्नी के सतीत्व और निष्ठा पर विश्वास नहीं करता था बल्कि मैं उसके व्यभिचार को अपने सूस्त और आलसी जीवन से ऊबर पाने की उसकी इच्छा समझना चाहता था। इसलिए सामान्य स्त्री के समान शिष्टाचार को निभाना, यह उसकी बड़ी भूल थी।

इसलिए उसे उसकी बहानेबाजी से बचाने के लिए मैं स्वयं बाहर चाला जाता जितना कि मैं जा सकता था। मैंने अपना कमरा तक खाली किया जिससे वह अपना 'काम' कर सके। और ऐसे ही समय बीतता गया।

एक दिन बेवजह मेरी कुमहोंग के हाथों पिटाई हुई। मैं दर्द से रो पड़ा और घर से बाहर निकल पड़ा। कुमहोंग से मैं इतना डर गया था कि पूरे तीन दिन मैं घर ही नहीं लौटा। जब मैं लौटा तबतक वह जा चुकी थी, बस उसके गंदे जुराबे घर के कोने में पड़े थे।

वह सब इतना बेतुका था कि बस, ... और इस प्रकार मुझे अपनी पत्नी से छुटकारा मिला। मेरे कई दोस्त कुमहोंग के भाग जाने के अप्रिय किस्से को लेकर मुझे मिलने आ जाते और मुझे सांत्वना देते। पर मैं यह कतई समझ ही नहीं पाया आखिर वे क्या चाहते हैं।

वे बता रहे थे कि उन्होंने कुमहोंग को एक आदमी के साथ दूर माउंट क्वानअक के पास क्याचोन की ओर जानते देखा था। वह पुरुष निश्चित ही कायर होगा जो इस प्रकार इतनी दूर भाग गया था।

3

अब मैं जिस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा था, उसमें मैं अपने आपको इन्सान नहीं कह सकता था। मेरी याददाश्त को जंग लग रही थी, इस कारण मैं दो महीने में उसका पूरा नाम भी भूल गया था। इसी दौरान जब मेरा जीवन पुरी तरह से ठहरा हुआ था, तब कुमहोंग उस सौभाग्यशाली दिन को वापसी डाक की तरह लौट आयी थी। उसे देखकर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ था।

उसका वह भद्दा रूप देखकर मैं दुखी हुआ। मैंने उसे डाँटा नहीं, उल्टे मैं उसके लिए थोड़ी शराब, मछली के आकार का कुछ नमकीन और माँस में चावल मिलाया हुआ गरम सूप ले आया और उसे खिला दिया था। पर अब भी वह मुझ पर गुस्सा थी और मुझे भला-बुरा कहती रोने लगी थी। मैं भी फफक कर रो पड़ा।

"अब बहुत देर हो गयी है। तुम्हें जाकर अब पूरे दो महीने बीत चुके हैं।अब मुझे तुम छोड दो।"

"फिर मेरा क्या होगा?"

"कोई ढंग का मिल जाए तो शादी कर लेना।"

"क्या तुम भी शादी कर लोगे?"

विदाई के दुखी क्षणों में सांत्वना देकर बिछड़ना ही तो होता है। मैंने इसी संचेतना से कुमहोंग से विदा ली थी। जब वह मुझे छोड़ गयी, उसने मुझे एक तकिया भेंट किया था। उस तकिये पर कुछ कहूँ? वह तकिया दो व्यक्तियों के लिए काफी था। उसने उसे लेने पर बहुत जोर दिया, जबकि मैंने उसे लेने से मना किया था। दो हफ्ते तक मैं अकेला ही उसपर अपना सिर टिकाए पड़ा रहा था। पर वह इतना बड़ा था कि मैं उस पर आराम से नहीं सो सकता था। इसके अलावा उस तकिये से बालों के तेल की एक अजीब गंध आती थी जो निश्चित ही मेरी नहीं थी और वह गंध मुझे सोने नहीं देती थी।

एक दिन मैंने उसे एक पोस्ट कार्ड भेजा कि मैं बहुत बीमार हूँ और वह तुरंत आ जाए।

कुमहोंग ने आकर मुझे अत्यंत दयनीय दशा में पाया। अगर मुझे कुछ और दिन अकेला छोड़ दिया जाता तो मैं भूख से मर जाता। उसने कहा और अपने ब्लाऊज की बाँह ऊपर कर वह उसी दिन काम में जुट गयी ताकि वह मुझे कुछ खिला सके।

पृथ्वी पर स्वर्ग ! हालांकि वह दिन बड़ा सर्द था, पर मैं छिंका भी नहीं और मुझे बड़ा आराम मिला रहा था। ..... और ऐसा कुछ दो या पांच महीने तक चला होगा और एक दिन अचानक कुमहोंग चली गयी।

डेढ़ महीने मैं उसकी बाट जोहता रहा। यही सोचकर कि इस घर की याद उसे लौटा लायेगी, पर मैं प्रतीक्षा से थक गया और ऊबकर मैंने अपना सारा सामान बेच दिया और इक्कीस साल के बाद मैं अपने घर फिर लौटा।

मैंने देखा, मेरे घर की दशा जराजीर्ण हो गयी है। मैं, ई सांग, अविश्वासी बेटा, जो इस घर की बरबादी का कारण था, अब पुरी तरह टूट गया था। पिछले दो सालों में मैं खुद भी टूट चुका था और अब मैं सत्ताईस साल का हो गया था।

अब मुझे यकीन हो गया कि संसार की हर औरत में वेश्या का गुण विद्यमान होता है। फिर भी जब मैं वेश्या के हाथों पर चाँदी की सिक्के रखता हूँ तो यह कभी नहीं सोचता कि वह पेशेवर है। हो सकता है मेरा यह सिद्धांत आपको कुमहोंग का मेरे जीवन से बिछड़ने का कारण भी लगे किंतु अपने व्यक्तिगत अनुभव के कारण ही यह मेरा चिंतन बन गया है।

4

मेरे बिगड़ते मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ के दौरान मैंने कई उपन्यास, कविताएँ लिखीं जो मेरे ह्रासोन्मुख जीवन के दर्द को और गहरा करती थीं। मैं उस स्थिति में पहुँच गया था, जहाँ इस प्रकार और जीना असंभव था। अब मुझे देश छोड़कर निर्वासित होना था।

पर मैं कहाँ जा सकता? मैं डींग हांकता कि मैं टोक्यो जा रहा हूँ। मैंने अपने दोस्तों से कहा कि मैं इलेक्ट्रिक इंजिनियरिंग की पढ़ाई करूँगा। मैंने अपनी स्कूल टीचर से कहा कि मैं सिंगल-युनिट प्रीटिंग का एडवान्स कोर्स करने जा रहा हूँ और अपने आत्मीय दोस्तों से झूठ कहा कि मैं पाँच विदेशी भाषाएँ सीखूँगा और कानून का अध्ययन करूँगा। कईयोंने मुझ पर विश्वास किया और कुछ लोगों ने नहीं। खैर, ये ई सांग के निराशापूर्ण जीवन के आखरी झूठ थे उतने ही रिक्त जितनी की उसकी जेब।

एक दिन जब मैं अपने दोस्त के साथ पी रहा था और हमेशा की तरह उनसे झुठी कहानियाँ कह रहा थी कि किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर थपकाया। उसका नाम भी किम सांग था।

"हम बहुत दिनों से मिले नहीं किम सांग" उसने कहा। (उसने मुझे किम सांग नाम से संबोधित किया था। वास्तव ई सांग भी किम सांग ही है।) मेरे साथ कोई है जो आपसे मिलना चाहता है। आप उससे मिलना चाहेंगे?"

"कौन है? पुरुष या स्त्री? "

"स्त्री है। जो सब बहुत रोचक बना देती है। "

"स्त्री"?

"वह कभी तुम्हारी ओकसांग (पत्नी) हुआ करती थी।"

"अच्छा तो कुमहोंग सिओल में है! पर अब उसे मुझसे क्या चाहिए? किम सांग ने मुझ से कहा कि वह अपनी बहन इलसिम के साथ रह रही है। कुछ पल मैं सकुचाया, किंतु आखिर मैंने अपना मन बना लिया और इलसिम के घर चला गया।"

" मैंने सुना कि तुम्हारी बहन वापस लौटी है।"

"अच्छा ... अगर वह नहीं आयी हो तो मेरे प्यारे जीजा! मुझे तो लगा था कि तुम मर खप गए हो। इतने साल कैसे जीवित रहें?"

जैसा अपेक्षित था कुमहोंग जरा जर्जर और मरियल सी लग रही थी। उसका हुलिया देखकर लग ही रहा था कि जीवन के संघर्ष ने उसे तोड दिया है।

"हरामी, मैंने तुम्हे कितना याद किया। इसलिए मैं यहाँ सिओल में हूँ। नहीं तो मैं यहाँ क्यों आती?"

"मैं भी तो तुमसे ही मिलने आया हूँ।"

"मैंने सुना कि तुमने शादी कर ली है।"

"बेकार की बातें मत करो।"

"तो शादी नहीं की?"

"नहीं। बिलकुल नहीं।"

और अचानक एक लकडी का तकिया मेरी और उछला। मैं वैसे ही पहले की तरह बेवकूफ होकर हँस पडा।

फिर शराब पीने के लिए टेबल लगाया गया। मैंने पहले शराब ली फिर उसने। फिर हमने मिलकर योंगब्योन और युग्जाबेगी[1] का गान गया। जैसे जैसे अंधेरा घना होने लगा हमारी बातों से यह पता चलने लगा कि हमारी यब आखरी मुलाकात होगी। चांदी की चॉप स्टिक से टेबल पर ताल साधते हुए गुमहोंग कालातीत दर्दनाक धून में गाने लगी जिस मैंने पहले कभी सुना नहीं था।

यह एक धोखे का सपना है
उसे भी धोखा है
घुता मुडता, भटकता जीवन
अपने छायादार दिल को लगा दो आग।

****

[1] कोरिया के उत्तरपश्चिम जो वर्तमान में उत्तर कोरिया का लोक गीत है।